#### Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्नाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्रा	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्जूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क़	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्स्रुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	<u> </u>	इल्ज़ाम	इल्जाम	रत्न	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्गन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्षांत	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज्ज	<b>उ</b> ज़	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	ह्रास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	<b>छुट्टी</b>	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	कॉफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्त:
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इ्ज़त	इज़्जत	स्रेह	स्नेह	वक्फ़	वक्फ़	लड्डू	ਕਵੂ	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध्ड्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुर्री	कुर्री
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कटू	कटू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	सख़्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	ॐ	हॅंद	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख्म	सपत्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़रव	फ़ख	ल्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।। अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यिंद एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यृह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याला करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यालाएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

## गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोटी फिर अळल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

# 119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

## केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लि-पकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हट्जें मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसे-सर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिप-कार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

# तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइ-एसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43.950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24.950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्य1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिख़े, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंद्रबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नो जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है और शानदार

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

### गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।।

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालों को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर

## गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निद्यों में रेत और फूल फिलयाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

दुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसकों सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सूनने को बहत सी नाँह-नूह की और कहा - परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing पपहपवपवहवव पपद्वपवपवद्ववव Rakar spacing पपळूपवपवळूवव पपकपवपवकवव पपक्षपवपवक्षवव पपद्धपवपवद्धवव पपकपवपवकवव पपक्रपवपवक्रवव पपख़पवपवख़वव पपञ्चपवपवज्ञवव पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव पपखपवपवखवव पपख्रपवपवख्रवव पपगपवपवगवव पपद्मपवपवद्मवव पपगपवपवगवव पपग्रपवपवग्रवव पपज़पवपवज़वव पपद्भपवपवद्भवव Conjunct spacing पपघपवपवघवव पपघ्रपवपवघ्रवव पपड़पवपवड़वव पपद्दपवपवद्दवव पपङ्पवपवङ्वव पपङ्गपवपवङ्गवव पपक्तपवपवक्तवव पपढ़पवपवढ़वव पपन्भपवपवन्भवव पपचपवपवचवव पपच्चपवपवच्चवव पपरुपवपवरुवव पपफ़पवपवफ़वव पपन्मपवपवन्मवव पपछपवपवछवव पपछ्रपवपवछ्रवव पपरूपवपवरूवव पपयपवपवयवव पपल्जपवपवल्जवव पपजपवपवजवव पपज्रपवपवज्रवव पपड्यपवपवड्यवव पपक्षपवपवक्षवव पपल्थपवपवल्थवव पपझपवपवझवव पपझ्रपवपवझ्रवव पपज्जपवपवज्जवव पपज्ञपवपवज्ञवव पपल्भपवपवल्भवव पपञपवपवञवव पपञ्जपवपवञ्जवव पपज्थपवपवज्थवव पपल्मपवपवल्मवव पपटपवपवटवव पपट्रपवपवट्रवव पपज्यपवपवज्यवव पपल्यपवपवल्यवव Vowel spacing पपठपवपवठवव पपठ्रपवपवठ्रवव पपज्सपवपवज्सवव पपद्यपवपवद्यवव पपडपवपवडवव पपअपवपवअवव पपड्रपवपवड्रवव पपछ्यपवपवछ्यवव पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव पपढपवपवढवव पपअपवपवअवव पपद्रपवपवद्रवव पपट्यपवपवट्यवव पपद्मपवपवद्मवव पपणपवपवणवव पपॲपवपवॲवव पपण्रपवपवण्रवव पपठ्यपवपवठ्यवव पपष्टपवपवष्टवव पपतपवपवतवव पपइपवपवइवव **ччячачаяаа** पपड्यपवपवड्यवव पपन्भपवपवन्भवव पपथपवपवथवव पपईपवपवईवव पपथ्रपवपवथ्रवव पपढ्यपवपवढ्यवव पपष्ठपवपवष्ठवव पपदपवपवदवव पपउपवपवउवव पपद्रपवपवद्रवव पपट्टपवपवट्टवव पपल्जपवपवल्जवव पपधपवपवधवव पपऊपवपवऊवव पपध्रपवपवध्रवव पपट्रपवपवट्रवव पपह्रपवपवह्नवव पपनपवपवनवव पपएपवपवएवव पपन्नपवपवन्नवव पपठ्रपवपवठ्रवव पपह्नपवपवह्नवव पपपपवपवपवव पपऐपवपवऐवव पपप्रपवपवप्रवव पपडूपवपवडूवव पपह्मपवपवह्मवव पपफपवपवफवव पपऍपवपवऍवव पपडूपवपवडूवव पपफ्रपवपवफ्रवव पपह्यपवपवह्यवव *पपबपवपवबवव* पपऎपवपवऎवव पपढूपवपवढूवव पपब्रपवपवब्रवव पपह्लपवपवह्लवव पपभपवपवभवव पपआपवपवआवव पपभ्रपवपवभ्रवव पपत्तपवपवत्तवव पपह्नपवपवह्नवव पपमपवपवमवव पपओपवपवओवव पपम्रपवपवम्रवव पपत्खपवपवत्खवव पपयपवपवयवव पपऔपवपवऔवव पपग्रपवपवग्रवव पपत्थपवपवत्थवव U/Uu variant spacing पपरपवपवरवव पपऋपवपवऋवव पपरूपवपवरूवव पपत्नपवपवत्नवव पपलपवपवलवव पपऋपवपवऋवव पपल्लपवपवल्लवव पपत्सपवपवत्सवव पपहुपवपवहुवव पपळपवपवळवव पपल्पवपवल्वव पपत्यपवपवत्यवव पपव्रपवपवव्रवव पपहूपवपवहूवव *<u>uuauauaaaa</u>* पपॡपवपवॡवव पपश्रपवपवश्रवव पपद्धपवपवद्भवव पपहृपवपवहृवव पपशपवपवशवव **ччячачаяаа** पपद्गपवपवद्गवव पपहृपवपवहृवव पपषपवपवषवव पपस्रपवपवस्रवव पपद्धपवपवद्भवव पपह्रपवपवह्रवव पपसपवपवसवव पपह्रपवपवह्रवव पपद्भपवपवद्भवव पपह्रपवपवह्रवव

पपरुपवपवरुवव
पपरूपवपवरूवव
पपदुपवपवदुवव
पपदूपवपवदूवव
पपदुपवपवदुवव

Vowel sign spacing

पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकेंपप पपपंपपरंपपकेंपप

पपपापपरापपकापप पपपिपपरिपपकिपप पपपीपपरीपपकीपप पपपींपपरींपपकींपप पपपींपपरींपपकींपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपौपपरौपपकौपप पपपौंपपरौंपपकौंपप पपपौंपपरौंपपकौंपप

पपपुपपरुपपकुपप पपपूपपरूपपकृपप पपपृपपरृपपकृपप पपपूपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकुपप पपपूपपरूपपकुपप

पपर्पपपर्पपक्षपप पपर्पपपर्रपपक्षपप पपर्पपपर्रपपक्षपप

पपपऽपवपववऽवव पप?पवपव?वव पपप:पवपवव:वव

Numeral spacing	पपफ, पवफ.	पपआ, पवआ.	पपद्द, पवद्द.
	पपब, पवब.	पपओ, पवओ.	पपष्टं, पवष्टं.
००००१०१०११	पपभ, पवभ.	पपऔ, पवऔ.	पपन्भ, पवन्भ.
००१०१०११११	पपम, पवम.	पपऋ, पवऋ.	पपष्ठ, पवष्ठ.
००२०१०१२११	पपय, पवय.	पपऋ, पवऋ.	पपल्ज, पवल्ज.
००३०१०१३११	पपर, पवर.	पपल, पवल.	पपह्ल, पवह्ल.
००४०१०१४११	पपल, पवल.	पपॡ, पवॡ.	पपह्नं, पवह्नं.
००५०१०१५११	पपळ, पवळ.		पपह्लं, पवह्लं.
००६०१०१६११	पपव, पवव.		पपह्नं, पवह्नं.
००७०१०१७११	पपशं, पवश.	पपङ्ग, पवङ्ग.	V.
००८०१०१८११	पपष, पवष.	पपछ्र, पवछ्र.	पपहु, पवहु.
००९०१०१९११	पपसं, पवस.	पपट्र, पवट्र.	पपहूँ, पवहूँ.
	पपह, पवह.	पपठ्र, पवठ्र.	पपहूँ, पवहूँ.
Letter-punct spacing	पपक़, पवक़.	पपड्र, पवड्र.	पपहूं, पवहूं.
पपक, पवक.	पपख़, पवख़.	पपद्र, पवद्र.	पपहुँ, पवहुँ.
पपख, पवख.	पपग़, पवग़.	पपद्र, पवद्र.	पपहूँ, पवहूँ.
पपग, पवग.	पपज़, पवज़.	पपर्, पवर्.	पपरु, पवरु.
पपघ, पवघ.	पपड़, पवड़.	पपह्न, पवह्न.	पपरू, पवरू.
पपङ, पवङ.	पपढ़, पवढ़.	पपळ्र, पवळ्र.	पपदु, पवदु.
पपच, पवच.	पपफ़, पवफ़.		पपदूँ, पवदूँ.
पपछ, पवछ.	पपय़, पवय़.	पपक्त, पवक्त.	पपर्दें, पवर्दें.
पपज, पवज.	पपक्ष, पवक्ष.	पपरु, पवरु.	
पपझ, पवझ.	पपज्ञ, पवज्ञ.	पपरू, पवरू.	-
पपञ, पवञ.		पपट्ट, पवट्ट.	पपक; पवक:
पपट, पवट.	पपअ, पवअ.	पपट्ठ, पवट्ठ.	पपख; पवख:
पपठ, पवठ.	पपञॆ, पवञॆ.	पपठ्ठ, पवठ्ठ.	पपग; पवग:
पपड, पवड.	पपॲ, पवॲ.	पपड्ढ, पवड्ढ.	पपघ; पवघ:
पपढ, पवढ.	पपइ, पवइ.	पपडु, पवडु.	पपङ; पवङ:
पपणं, पवण.	पपई, पवई.	पपढू, पवढू.	पपच; पवच:
पपत, पवत.	पपउ, पवउ.	पपद्ध, पवद्ध.	पपछ; पवछ:
पपथं, पवथ.	पपऊ, पवऊ.	पपद्ग, पवद्ग.	पपज; पवज:
पपद, पवद.	पपए, पवए.	पपद्ध, पवद्ध. पपद पवद	पपझ; पवझ:
	<del></del>	44.G. 49.G.	

पपऐ, पवऐ.

पपऍ, पवऍ.

पपऎ, पवऎ.

पपध, पवध.

पपन, पवन.

पपप, पवप.

पपद्भ, पवद्भ.

पपद्व, पवद्व.

पपद्ध, पवद्ध.

पपञ; पवञ:

पपट; पवट:

पपठ; पवठ:

<del></del>		<del></del>				
पपड; पवड:	पपॲ; पवॲ:	पपड्ढ; पवड्ढ:	पपघ। पवघ:	पपड़  पवड़:	पपह्न। पवहः	पपरू। पवरू:
पपढ; पवढ:	पपइ; पवइ:	पपड्डु; पवड्डु:	पपङ। पवङ:	पपढ़। पवढ़:	पपळ्। पवळ्र:	पपदु। पवदुः
पपण; पवण:	पपई; पवई:	पपढ्ढ; पवढ्ढ:	पपच। पवच:	पपफ़। पवफ़:		पपदू। पवदू:
पपत; पवत:	पपउ; पवउ:	पपद्ध; पवद्धः	पपछ। पवछ:	पपय्। पवयः	पपक्त। पवक्तः	पपदृ। पवदृ:
पपथ; पवथ:	पपऊ; पवऊ:	पपद्गः, पवद्गः	पपज। पवज:	पपक्ष। पवक्षः	पपरू। पवरू:	
पपद; पवद:	पपए; पवए:	पपद्ध; पवद्ध:	पपझ। पवझ:	पपज्ञ। पवज्ञ:	पपरू। पवरू:	-
पपध; पवध:	पपऐ; पवऐ:	पपद्भ; पवद्भ:	पपञ। पवञ:		पपट्ट। पवट्ट:	पपक! पवक?
पपन; पवन:	पपऍ; पवऍ:	पपद्व; पवद्व:	पपट। पवट:	पपअ। पवअ:	पपट्ठ। पवट्ट:	पपख! पवख?
पपप; पवप:	पपऎ; पवऎ:	पपद्ध; पवद्ध:	पपठ। पवठ:	पपञ्जे। पवञै:	पपठ्ठ। पवठ्ठः	पपग! पवग?
पपफ; पवफ:	पपआ; पवआ:	पपद्द; पवद्द:	पपड। पवड:	पपॲ। पवॲ:	पपडूँ। पवडूँ:	पपघ! पवघ?
पपब; पवब:	पपओ; पवओ:	पपष्ट; पवष्ट:	पपढ। पवढ:	पपइ। पवइ:	पपड्ड। पवड्ड:	पपङ! पवङ?
पपभ; पवभ:	पपऔ; पवऔ:	पपन्भ; पवन्भ:	पपण। पवण:	पपई। पवई:	पपढूँ। पवढूँ:	पपच! पवच?
पपम; पवम:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठ; पवष्ठ:	पपत। पवत:	पपउ। पवउ:	पपद्धँ। पवद्धः	पपछ! पवछ?
पपय; पवय:	पपऋ; पवऋ:	पपल्ज; पवल्ज:	पपथ। पवथ:	पपऊ। पवऊ:	पपद्ग। पवद्गः	पपज! पवज?
पपर; पवर:	पपलः; पवलः:	पपह्न; पवह्न:	पपद। पवद:	पपए। पवए:	पपद्ध। पवद्धः	पपझ! पवझ?
पपल; पवल:	पपॡ; पवॡ:	पपह्नं; पवह्नं:	पपध। पवध:	पपऐ। पवऐ:	पपद्भ। पवद्भः	पपञ! पवञ?
पपळ; पवळ:		पपह्नं; पवह्नं:	पपन। पवन:	पपऍ। पवऍ:	पपद्व। पवद्वः	पपट! पवट?
पपवः पववः		पपह्नं; पवह्नं:	पपप। पवप:	पपऎ। पवऎ:	पपद्ध। पवद्धः	पपठ! पवठ?
पपश; पवश:	पपङ्र; पवङ्र:	•	पपफ। पवफ:	पपआ। पवआ:	पपद्द। पवद्दः	पपड! पवड?
पपषः, पवषः	पपछ्र; पवछ्र:	पपहु; पवहु:	पपब। पवब:	पपओ। पवओ:	पपष्टे। पवष्टे:	पपढ! पवढ?
पपसं; पवस:	पपट्र; पवट्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपभ। पवभ:	पपऔ। पवऔ:	पपन्भ। पवन्भः	पपण! पवण?
पपहः, पवहः	पपठ्र; पवठ्र:	पपहुँ; पवहूं:	पपम। पवम:	पपऋ। पवऋ:	पपष्ठ। पवष्ठः	पपत! पवत?
पपक़; पवक़:	पपड्र; पवड्र:	पपहृः पवहृः	पपय। पवय:	पपऋ। पवऋ:	पपल्ज। पवल्जः	पपथ! पवथ?
पपख़; पवख़:	पपद्र; पवद्र:	पपहुँ; पवहुँ:	पपर। पवर:	पपल्। पवलः	पपह्न। पवह्न:	पपद! पवद?
पपग़; पवग़:	पपद्र; पवद्र:	पपहूं; पवहूं:	पपल। पवल:	पपॡ। पवॡ:	पपह्न। पवह्न:	पपधं! पवधं?
पपज़; पवज़:	पपर्; पवर्:	पपरु; पवरु:	पपळ। पवळ:	ζ. ζ	पपह्न। पवह्न:	पपन! पवन?
पपड़; पवड़:	पपह्र; पवह्र:	पपरू; पवरू:	पपव। पवव:		पपह्व। पवह्व:	पपप! पवप?
पपढ़; पवढ़:	पपळ्र; पवळ्र:	पपदुः, पवदुः	पपश। पवश:	पपङ्ग। पवङ्रः	(4.)	पपफ! पवफ?
पपफ़; पवफ़:		पपदूः पवदूः	पपष। पवष:	पपछ्र। पवछ्र:	पपहु। पवहु:	पपब! पवब?
पपय़; पवय़:	पपक्त; पवक्त:	पपदृः पवदृः	पपस। पवस:	पपट्र। पवट्र:	पपहू। पवहू:	पपभ! पवभ?
पपक्ष; पवक्ष:	पपरु; पवरु:		पपह। पवह:	पपठ्र। पवठ्रः	पपह्न। पवह:	पपम! पवम?
पपज्ञ; पवज्ञ:	पपरू; पवरू:	_	पपक्र। पवक़:	पपड्र। पवड्र:	पपहॄ। पवहॄ:	पपय! पवय?
יוארו ווארו	पपट्ट; पवट्ट:	पपक। पवक:	पपख़  पवख़:	पपद्र। पवद्र:	पपहु। पवहु:	पपर! पवर?
पपअ; पवअ:	पपट्ठं; पवट्ठं:	पपख। पवख:	पपग्न  पवगः:	पपद्र। पवद्र:	पपहू। पवहू:	पपल! पवल?
पपॐ; पवॐ:	पपठ्ठ; पवठ्ठ:	पपग। पवग:	पपज्ञ। पवज्ञ:	पपर्। पवर्:	पपरु। पवरु:	पपळ! पवळ?
7751, 7451.		יוידר ווידר.	ועצר ווער ר.		771/ 741/	77W; 74W;

गमन। गनन	וווו ווחס			ппэп эппа	וווום בוום	"anana"
पपव! पवव?	पपङ्र! पवङ्ग?	חחבו חבבי	पपफ-फपव	पपआ-आपव पपओ-ओपव	पपद्-द्दपव	"डपवपड"
पपश! पवश?	पपछ्! पवछ्र?	पपहु! पवहु?	पपब-बपव	पपऔ-औपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपष! पवष?	पपट्र! पवट्र?	पपहू! पवहू?	पपभ-भपव		पपन्भ-भपव	"णपवपण"
पपस! पवस?	पपठ्र! पवठ्र?	पपह्! पवह?	पपम-मपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"तपवपत"
पपह! पवह?	पपड्र! पवड्र?	पपहृ! पवहृ?	पपय-यपव	पपऋ-ऋपव	पपल्ज-ल्जपव	"थपवपथ"
पपक़! पवक़?	पपद्र! पवद्र?	पपह्रु! पवह्रु?	पपर-रपव	पपल-लपव	पपह्ल-ह्लपव	"दपवपद"
पपख़! पवख़?	पपद्र! पवद्र?	पपहू! पवहू?	पपल-लपव	पपॡ-ॡपव	पपह्न-ह्नपव	"धपवपध"
पपग़! पवग़?	पपरू! पवरू?	पपरु! पवरु?	पपळ-ळपव		पपह्न-ह्नपव	"नपवपन"
पपज़! पवज़?	पपह्न! पवह्न?	पपरू! पवरू?	पपव-वपव	पपङ्र-ङ्रपव	पपह्न-ह्नपव	"पपवपप"
पपड़! पवड़?	पपळू! पवळू?	पपदु! पवदु?	पपश-शपव			"फपवपफ"
पपढ़! पवढ़?		पपदू! पवदू?	पपष-षपव	पपछ्र-छ्रपव	पपहु-हुपव	"बपवपब"
पपफ़! पवफ़?	पपक्त! पवक्त?	पपदृ! पवदृ?	पपस-सपव	ччट्र-ट्रपव	पपहूँ-हूँपव	"भपवपभ"
पपय़! पवय़?	पपरु! पवरु?		पपह-हपव	पपठ्र-ठ्रपव	पपह-हंपव पपह्-हृपव	"मपवपम"
पपक्ष! पवक्ष?	पपरू! पवरू?	-	पपक़-क़पव	पपड्र-ड्रपव		"यपवपय"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपक-कपव	पपख़-ख़पव	पपद्र-द्रपव	पपह्र-ह्रुपव	"रपवपर"
	पपट्ट! पवट्ट?	पपख-खपव	पपग़-ग़पव	पपद्र-द्रपव	पपहूँ-हूँपव	"लपवपल"
पपअ! पवअ?	पपठ्ठ! पवठ्ठ?	पपग-गपव	पपज़-ज़पव	पपरू-रूपव	पपरुँ-रुपव	"ळपवपळ"
पपऄ! पवऄ?	पपडूं! पवडूं?	पपघ-घपव	पपड़-ड़पव	पपह्र-ह्रपव	पपरू-रूपव	"वपवपव"
पपॲ! पवॲ?	पपडूँ! पवडूँ?	पपङ-ङपव	पपढ़-ढ़पव	पपळू-ळूपव	पपदु-दुपव	"शपवपश"
पपइ! पवइ?	पपढूँ! पवढूँ?	पपच-चपव	पपफ़-फ़पव		पपदूँ-दूँपव	"षपवपष"
पपई! पवई?	पपद्धं! पवद्धं?	पपछ-छपव	पपय़-य़पव	पपक्त-क्तपव	पपदृ-दृपव	"सपवपस"
पपउ! पवउ?	पपद्ग! पवद्ग?	पपज-जपव	पपक्ष-क्षपव	पपऱ-ऱ्रपव		"हपवपह"
पपऊ! पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपझ-झपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपरू-रूपव	-	"क्रपवपक"
पपए! पवए?	पपद्ध! पवद्ध?	पपञ-ञपव		पपट्ट-ट्टपव	"कपवपक"	"खपवपख"
पपऐ! पवऐ?	पपद्व! पवद्व?	पपट-टपव	पपअ-अपव	पपट्ठ-ट्ठपव	"खपवपख"	"ग़पवपग़"
पपऍ! पवऍ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपठ-ठपव	पपऄ-ऄपव	पपठु-ठुपव	"गपवपग"	"जपवपज़"
पपऐ! पवऐ?	पपद्द! पवद्द?	पपड-डपव	पपॲ-ॲपव	पपड्ट-ड्टपव	"घपवपघ"	"ड़पवपड़"
पपआ! पवआ?	पपष्टं! पवष्टं?	पपढ-ढपव	पपइ-इपव	पपड्ड-ड्डपव	"ङपवपङ"	"ढ़पवपढ़"
पपओ! पवओ?	पपन्भ! पवन्भ?	पपण-णपव	पपई-ईपव	पपढ्ढ-ढ्ढपव	"चपवपच"	"फ़पवपफ़"
पपऔ! पवऔ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपत-तपव	पपउ-उपव	पपद्ध-द्धपव	"छपवपछ"	"य़पवपय़"
पपऋ! पवऋ?	पपल्ज! पवल्ज?	पपथ-थपव	पपऊ-ऊपव	पपद्ग-द्गपव	"जपवपज"	"क्षपवपक्ष"
पपऋ! पवऋ?	पपह्न! पवह्न?	पपद-दपव	पपए-एपव	पपद्ध-द्वपव	"झपवपझ"	"ज्ञपवपज्ञ"
पपलृ! पवलृ?	पपह्न! पवह्न?	पपध-धपव	पपऐ-ऐपव	पपद्भ-द्भपव	"ञपवपञ"	,
पपॡ! पवॡ?	पपह्न! पवह्न?	पपन-नपव	पपऍ-ऍवव	पपद्व-द्वपव	"टपवपट"	"अपवपअ"
- · · Ł · · · Ł ·	पपह्न! पवह्न?	पपप-पपव	पपऎ-ऎपव	पपद्ध-द्धपव	"ठपवपठ"	"ऄपवपऄ"

			ev L. L	C C: C
"ॲपवपॲ" 	"डुपवपड्ड"	Num-punct spacing	Ii Vowel sign - base	पपहिपपहिंपपर्हिपप
"इपवपइ"	"ढ्रुपवपढ्ढ"	पवप ₹१०१ वपव	पपकिपपकिंपपर्किपप	पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप
"ईपवपई" 	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹२०१ वपव	पपखिपपखिंपपर्खिपप	पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप
" <b>3</b> पवप3"	"द्गपवपद्ग"	पवप ₹३०१ वपव	पपगिपपगिंपपर्गिपप	
"ऊपवपऊ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹४०१ वपव	पपघिपपघिंपपर्घिपप	
"एपवपए" "``	"द्भपवपद्भ"	पवप ₹५०१ वपव	पपङिपपङिंपपर्ङिपप	
"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹६०१ वपव	पपचिपपचिंपपर्चिपप	
"ऍपवपऍवव 	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹७०१ वपव	पपछिपपछिंपपर्छिपप	
"ऎपवपऎ"	" <b>द्</b> पवपद्द"	पवप ₹८०१ वपव	पपजिपपजिंपपर्जिपप	
"आपवपआ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप ₹९०१ वपव	पपझिपपझिंपपर्झिपप	
"ओपवपओ" "	"भपवपभ" "	,	पपञिपपञिंपपर्ञिपप	
"औपवपऔ" "	"ष्ठपवपष्ठ"	०००,०१०,०११	पपटिपपटिंपपर्टिपप	
" <del></del>	"ल्जपवपल्ज"	008,080,888	पपठिपपठिंपपर्ठिपप	
"ऋपवपऋ"	"ह्रपवपह्न" "	००२,०१०,२११	पपडिपपडिंपपर्डिपप	
"ऌपवपऌ" "	"ह्रपवपह्न" "	003,080,388	पपढिपपढिंपपर्ढिपप	
"ॡपवपॡ"	"ह्रपवपह्न" "	००४,०१०,४११	पपणिपपणिंपपर्णिपप	
U <del></del> U	"ह्वपवपह्न"	००५,०१०,५११	पपतिपपतिंपपर्तिपप	
"ङ्रपवपङ्र" " <del>राज्यार</del> "	U <del></del> U	००६,०१०,६११	पपथिपपथिंपपर्थिपप	
"छ्रपवपछ्र"	"हुपवपहु"	००७,०१०,७११	पपदिपपदिंपपर्दिपप	
"ट्रपवपट्र"	"हूपवपहू"	००८,०१०,८११	पपधिपपधिंपपर्धिपप	
"ठ्रपवपठ्र" "उपराप्त"	"हपवपह"	००९,०१०,९११	पपनिपपनिंपपर्निपप	
"ड्रपवपड्र" "उपराप्त"	"हृपवपहृ"		पपपिपपपिंपपर्पिपप	
"द्रपवपद्र" "उपरापर"	"ह्रुपवपह्रु"	०००,०१०,०११	पपफिपपफिंपपर्फिपप	
"द्रपवपद्र" " <del>गान्यान</del> "	"हूपवपहू"	००१.०१०.१११	पपबिपपबिंपपर्बिपप	
"रूपवपरू"	"रुपवपरु" "रुपनपरु"	००२.०१०.२११	पपभिपपभिंपपर्भिपप	
"ह्रपवपह्र" "न्यानगरू"	"रूपवपरू"	003.080.388	पपमिपपमिंपपर्मिपप	
"ळ्पवपळ्"	"दुपवपदु" "नगनगन"	००४.०१०.४११	पपयिपपयिंपपर्यिपप	
<del> </del>	"दूपवपदू"	००५.०१०.५११	पपरिपपरिंपपरिंपप	
"क्तपवपक्त"	"दृपवपदृ"	००६.०१०.६११	पपलिपपलिंपपर्लिपप	
"ऋपवपरू" "ऋपनपरू"		१९७.०९०.७००	पपळिपपळिंपपळिंपप	
"रूपवपरू" "ट्राग्याट"		००८,०१०,८११	पपविपपविंपपर्विपप	
"ट्टपवपट्ट" "ट्टपवपट"		००९.०१० <u>.</u> ९११	पपशिपपशिंपपर्शिपप	
"दुपवपदु" "ट्यानगढ"			पपषिपपषिंपपर्षिपप	
"ठुपवपठु" "डुगुनगड"			पपसिपपसिंपपर्सिपप	
"ड्रपवपड्र"				

li Vowel sign	पपर्क्त्यिपप	पपर्ग्बिपप	पपङ्खींपप	पपछ्विपप	पपर्ट्रिपप	पपर्सिपप	पपर्झिपप
clusters	पपर्क्त्विपप	पपर्ग्भिपप	पपङ्गिपप	पपर्ज्किपप	पपर्ट्रीपप	पपर्त्मिपप	पपर्धिपप
पपर्क्किपप	पपर्क्विपप	पपर्ग्मिपप	पपङ्गीपप	पपर्ज्जिपप	पपर्ट्विपप	पपर्त्यिपप	पपर्द्रिपप
पपर्क्खिपप	पपक्स्टिपप	पपर्ग्यिपप	पपर्ङ्घिपप	पपर्ज्झिपप	पपट्वींपप	पपर्त्रिपप	पपर्द्विपप
पपर्क्यिपप	पपक्स्डिंपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्घींपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ट्विपप	पपर्ल्लिपप	पपर्द्ध्यिपप
पपर्क्चिपप	पपक्स्तिपप	पपर्ग्लिपप	पपर्ङ्चिपप	पपर्ज्तिपप	पपर्ट्रीपप	पपर्त्विपप	पपर्द्विपप
पपर्क्छिपप	पपक्स्पिपप	पपर्ग्विपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्ज्दिपप	पपर्व्रिपप	पपर्त्सिपप	पपर्द्ऱ्यिपप
पपर्क्जिपप	पपक्स्प्रिपप	पपर्ग्सिपप	पपङ्क्रीपप	पपर्ज्निपप	पपर्वठ्यपप	पपत्र्क्यिपप	पपर्ध्किपप
पपर्क्झिपप	पपर्क्प्रिपप	पपर्ग्ध्यिपप	पपङ्क्रिपप	पपर्ज्बिपप	पपर्ड्डिपप	पपर्ल्क्रिपप	पपर्ध्यिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्प्र्लपप	पपर्ग्धिपप	पपर्ड्मिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्ड्हिपप	पपर्त्सिपप	पपर्ध्निपप
पपर्क्ठिपप	पपर्ख्खिपप	पपग्न्यिपप	पपर्ड्यिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्ड्रिपप	पपर्त्खिपप	पपर्ध्यिपप
पपर्क्डिपप	पपर्ख्टिपप	पपग्भ्यिपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ड्ड्यिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्ध्रिपप
पपर्क्हिपप	पपर्ख्डिपप	पपर्ग्र्यिपप	पपर्च्किपप	पपर्ज्लिपप	पपर्ढ्विपप	पपर्ल्खिपप	पपर्ध्लिपप
पपर्क्णिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्ग्म्यिपप	पपर्च्खिपप	पपर्ज्विपप	पपर्ढ्वीपप	पपर्त्न्यिपप	पपर्ध्विपप
पपर्क्तिपप	पपर्ख्तिपप	पपग्र्निपप	पपर्च्चिपप	पपर्झ्किपप	पपर्द्विपप	पपर्ल्पिपप	पपर्ध्सिपप
पपर्क्थिपप	पपर्ख्दिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्टिपप	पपर्झ्गिपप	पपर्ढ्यिपप	पपर्त्प्लिपप	पपर्न्किपप
पपर्क्टिपप	पपर्खिपप	पपर्घ्जिपप	पपर्च्छिपप	पपर्झ्घिपप	पपर्व्ढ्यिपप	पपर्क्यिपप	पपर्न्खिपप
पपर्क्निपप	पपर्खिपप	पपर्घ्टिपप	पपर्च्डिपप	पपर्झ्पिप	पपर्ण्टिपप	पपर्त्स्निपप	पपर्न्चिपप
पपर्क्पिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्छिपप	पपर्झ्तिपप	पपर्प्टीपप	पपर्स्यिपप	पपर्म्छिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्डिपप	पपर्च्णिपप	पपर्झ्निपप	पपर्ण्ठिपप	पपर्त्स्विपप	पपर्न्जिपप
पपर्क्बिपप	पपर्ख्रिपप	पपर्घ्णिपप	पपर्च्तिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ण्डिपप	पपि्रस्यिपप	पपर्म्झिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्लिपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्थिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्हिपप	पपर्थ्किपप	पपर्न्टिपप
पपर्क्मिपप	पपर्ख्विपप	पपर्घ्दिपप	पपर्च्दिपप	पपर्झ्लिपप	पपर्णिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्ठिपप
पपर्क्यिपप	पपर्ख्शिपप	पपर्घ्निपप	पपर्च्धिपप	पपर्झ्विपप	पपर्ण्तिपप	पपर्थ्मिपप	पपर्न्डिपप
पपर्क्रिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्बिपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्झ्मिपप	पपर्ण्यिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्हिपप
पपर्क्लिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्मिपप	पपर्च्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्ण्रिपप	पपर्श्रिपप	पपर्न्तिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्त्यपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ञ्जिपप	पपर्ण्विपप	पपर्थ्लिपप	पपर्स्थिपप
पपर्क्शिपप	पपर्ग्किपप	पपर्घ्रिपप	पपर्च्लिपप	पपर्ञ्शिपप	पपर्त्किपप	पपर्थ्विपप	पपर्न्दिपप
पपर्क्षिपप	पपर्गिपप	पपर्घ्लिपप	पपर्च्चिपप	पपञ्चिंपप	पपर्त्खिपप	पपर्थ्सिपप	पपर्स्थिपप
पपर्क्सिपप	पपर्ग्जिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्सिपप	पपञ्ज्यिपप	पपर्त्तिपप	पपर्द्गिपप	पपर्न्निपप
पपर्क्हिपप	पपर्ग्णिपप	पपर्घ्सिपप	पपर्च्पिपप	पपर्ट्टिपप	पपर्त्थिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्पिपप
पपक्ळिंपप	पपर्ग्तिपप	पपर्घ्ल्यिपप	पपर्च्मिपप	पपर्ट्टीपप	पपर्लिपप	पपर्ह्िपप	पपर्न्फिपप
पपक्क्यिपप	पपर्ग्दिपप	पपर्ङ्किपप	पपर्च्चिपप	पपर्ह्विपप	पपर्त्पिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्बिपप
पपर्क्त्रिपप	पपर्ग्धिपप	पपङ्र्कीपप	पपर्छ्यिपप	पपर्ट्वीपप	पपर्त्फिपप	पपर्द्धिपप	पपर्मिपप
	पपर्ग्निपप	पपङ्खिपप	पपर्छ्रिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्द्भिपप	पपर्मिपप

पपर्न्यिपप	पपर्धिपप	पपर्म्बिपप	पपर्ल्थिपप	पपर्स्जिपप	पपर्ह्विपप
पपर्न्रिपप	पपर्प्निपप	पपर्म्भिपप	पपर्ल्दिपप	पपर्स्टिपप	पपर्ळ्यिपप
पपर्न्लिपप	पपर्प्पिपप	पपर्म्मिपप	पपर्ल्पिपप	पपर्स्ठिपप	पपर्ळ्पिपप
पपर्न्विपप	पपर्प्भिपप	पपर्म्यिपप	पपर्ल्फिपप	पपर्स्डिपप	पपळ्विपप
पपर्न्सिपप	पपर्प्मिपप	पपर्म्रिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्स्हिपप	पपर्स्यिपप
पपर्न्हिपप	पपर्प्यिपप	पपर्म्लिपप	पपर्ल्भिपप	पपर्स्तिपप	पपर्क्ष्मिपप
पपर्म्यिपप	पपर्प्रिपप	पपर्म्विपप	पपर्ल्मिपप	पपर्स्थिपप	पपर्क्विपप
पपन्भिर्वेपप	पपर्प्लिपप	पपर्म्शिपप	पपर्ल्यिपप	पपर्स्दिपप	
पपन्म्यिपप	पपर्ष्विपप	पपर्म्सिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्स्निपप	
पपन्स्टिपप	पपर्ष्मिपप	पपर्म्हिपप	पपर्ल्विपप	पपर्स्पिपप	
पपन्स्यिपप	पपर्प्सिपप	पपर्म्प्यिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्स्फिपप	
पपर्ह्यिपप	पपर्प्ळिपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्बिपप	
पपन्ज्यिंपप	पपर्प्त्यिपप	पपर्म्ब्यिपप	पपर्ल्यिपप	पपर्स्मिपप	
पपन्क्सिपप	पपर्फ्किपप	पपर्म्ब्रिपप	पपर्ल्ह्यिपप	पपर्स्यिपप	
पपन्त्र्यपप	पपर्फ्जिपप	पपम्भिर्येपप	पपल्र्क्यिपप	पपर्स्रिपप	
पपन्त्सिपप	पपर्फ्टिपप	पपर्म्श्रिपप	पपर्श्यिपप	पपर्स्लिपप	
पपर्स्थिपप	पपर्फ्तिपप	पपम्भिर्वेपप	पपर्ल्द्रिपप	पपर्स्विपप	
पपर्स्थिपप	पपर्म्दिपप	पपर्य्यिपप	पपर्श्किपप	पपर्स्सिपप	
पपर्न्द्रिपप	पपर्म्निपप	पपर्ग्रिपप	पपर्श्खिपप	पपस्पिर्यपप	
पपर्न्ह्रिपप	पपर्फ्पिपप	पपर्लिपप	पपर्श्चिपप	पपर्स्क्रिपप	
पपर्स्थिपप	पपफ्र्मिपप	पपर्व्यिपप	पपर्श्छिपप	पपस्त्र्यपप	
पपर्स्थिपप	पपर्प्यिपप	पपर्व्रिपप	पपर्श्टिपप	पपस्थ्यिपप	
पपर्म्प्रिपप	पपर्फ्रिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्श्तिपप	पपस्म्यिपप	
पपन्स्म्यपप	पपर्फ्लिपप	पपर्व्सिपप	पपर्श्निपप	पपस्त्विपप	
पपर्प्किपप	पपर्फ्शिपप	पपर्व्हिपप	पपर्श्बिपप	पपर्स्प्रिपप	
पपर्झिपप	पपर्भ्निपप	पपर्ल्किपप	पपर्श्मिपप	पपस्र्यिपप	
पपर्प्टिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्खिपप	पपर्श्यिपप	पपर्ह्लिपप	
पपर्प्विपप	पपर्भ्रिपप	पपर्ल्गिपप	पपर्श्रिपप	पपर्ह्तिपप	
पपर्प्टीपप	पपर्भ्लिपप	पपर्ल्चिपप	पपर्श्लिपप	पपर्ह्यिपप	
पपर्खिपप	पपर्भ्विपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्विपप	पपर्ह्मिपप	
पपर्व्हिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्टिपप	पपर्शिपप	पपर्हम्यिपप	
पपर्णिपप	पपर्म्तिपप	पपर्ल्ठिपप	पपर्श्चिपप	पपर्ह्हिपप	
पपर्प्तिपप	पपर्म्दिपप	पपर्ल्डिपप	पपर्स्किपप	पपर्ह्रिपप	
पपर्ष्थिपप	पपर्म्निपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्खिपप	पपर्ह्लिपप	
पपर्प्दिपप	पपर्म्पिपप	पपर्लिपप	पपर्स्छिपप	पपर्ह्निपप	

पप गप गप प Ч

#### Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्डपपक्ठप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्टपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्नप पक्नपपक्पपपक्फपपक्बपपक्भपपक्मपपक्यप पक्रपपक्रपपक्लपपक्ळपपक्ञपपक्वप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्टपपक्फपपक्यपप

पपग्कपपग्खपपगगपपग्घपपग्डपपगचप पग्छपपगजपपग्झपपग्जपपगटपपग्ठपपग्डप पग्डपपग्णपपग्तपपग्थपपग्दपपग्धपपग्नप पग्नपपग्पपगक्षपपग्बपपग्भपपग्मपपग्यपपग्रप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपग्गपपग्जपपग्डप पग्दपपग्फपपग्यपप पग्दपपग्फपपग्यपप

पपच्कपपच्खपपञापपघ्यपपच्छपपच्छप पच्छपपघ्जपपघ्झपपघ्जपपघ्टपपघ्ठपपघ्डप पच्टपपघ्णपपघ्तपपघ्थपपघ्दपपध्थपपञ्जप पञ्जपपघ्मपपघ्कपपघ्बपपघ्भपपघ्मपपघ्यप पञ्जपपघ्यपपघ्लपपघ्ळपपघ्ळपपघ्यप पद्भपपघ्यपपघ्सपपघ्हपपघ्कपपघ्खपपघ्मप पद्भपपघ्यपघ्टपपघ्कपपघ्यपप पपःकपपःखपपःगपपःखपपःखपपःयपः पःखपपःजपपःखपपःखपपःदपपःखपपःवपः पःदपपःगपपःयपपःखपपःयपःपः पःनपपःयपपःकपपःखपपःअपपःयप पःनपपःयपपःकपपःखपपःअपपःयप पःनपपःयपपःलपपःखपपःखपपःअप पःअपपःखपपःद्वपपःखपपःअप पःअपपःखपपःखपपःखपपः

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटपपछठप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपपछफपपछबप पछभपपछनपपछ्यपपछ्रपपछलप पछअपपछळपपछवपपछशपपछषपपछसप पछहपपछक्रपपछखपपछगपपछजपपछड़प पछढपपछफ़पपछखपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्यपपज्झपपज्यप पज्छपपज्जपपज्झपपञ्चपपज्टपपज्ठपपज्झप पज्दपपज्णपपज्तपपञ्थपपज्दपपज्धपपज्नप पज्नपपज्पपपज्कपपज्खपपज्भपपज्यप पज्जपपज्रपपज्लपपज्ळपपज्ञपपज्शप पज्थपपज्सपपज्हपपज्कपपज्खपपज्ञापपज्जप पज्डपपज्दपपज्कपपज्यपप

पपइकपपइखपपझ्गपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप पइनपपइमपपइम्मपपइबपपइभपपइमपपइयप पझपपइसपपइलपपइळपपइञपपइशप पइभपपइसपपइहपपइकपपइखपपइगपपइजप पइषपपइसपपइसपपइसपप पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्घपपञ्ङपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्गपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्पपञ्कपपञ्चपपञ्मपपञ्चप पञ्चपपञ्सपपञ्चपपञ्कपपञ्चपपञ्शप पञ्चपपञ्सपपञ्चपपञ्कपपञ्चपपञ्जप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्चपपञ्चप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्मपपट्चप पट्रपपट्सपपट्लपपट्ळपपट्ञपपट्वपपट्शप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्कपपट्कपपट्खपप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्ङपपठ्चप पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठपपठ्डप पठ्ढपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्धपपठ्नप पठ्नपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप पठ्मपठ्सपपठ्लपपठ्ळपपठ्ळपपठ्नपपठ्शप पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप पठ्डपपठ्ढपपठ्फपपठ्

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्डपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डप पड्डपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्थपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पड्नपपड्रपपड्लपपड्ळपपड्ळपपड्वपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्दपपड्इपपड्सपपड्यपप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप पढ्ढपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्णपपढ्कपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पढ्नपपढ्रपपढ्कपपढ्ळपपढ्मपढ्शप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्डपपढुद्रपपढ्फपपढ्यपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्डपपण्चप पण्डपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्डप पण्डपपण्णपपण्कपपण्खपपण्भपपण्मपण्यप पण्नपपण्पपण्कपपण्ळपपण्ळपपण्चपपण्शप पण्पपण्सपपण्हपपण्कपपण्खपपण्ञप पण्डपपण्डपपण्कपपण्यपप्

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्खपपत्ङपपत्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्खपपत्णप पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्पपत्भप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्रपपत्लपपत्ळप पत्ळपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पतापपत्नपपत्इपपत्कपपत्सपप

पपद्कपपद्खपपद्वपपद्वप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्डपपद्णपपद्तपपद्थपपद्वप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्वपपद्वप पद्नपपद्नपपद्पपद्कपपद्वप पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्डपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्डपपद्कपपद्खप

पपध्कपपध्खपपधापपध्यपपध्डपपध्चप पध्छपपध्जपपध्झपपध्ञपपध्टपपध्ठपपध्डप पध्डपपध्णपपध्तपपध्यपपध्दपपध्धपपध्नप पध्नपपध्मपपध्मपपध्खपपध्लपपध्मपपध्यप पध्रपपध्सपपध्हपपध्कपपध्खपपधापपध्जप पध्यपध्सपपध्हपपध्कपपध्खपपधापपद्जप पध्डपपध्टपपध्मपपध्यपप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्धपपन्डपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्दप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नपपन्पप पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्नपपन्त्रपपन्लप पन्ळपपन्छपपन्वपपन्शपपन्थपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्द्रपपन्कप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्धपपन्डपपन्खप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्दप पन्गपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नपपन्य पपन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्नपपन्त्रपपन्लप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्षपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपनापपन्जपपन्डपपन्दपपन्सपपन्यपप

पपप्कपपप्खपपपापपध्यपपङ्पपप्चपपप्छप पप्जपपप्झपपप्जपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्ढपपण्णप पप्तपपध्यपपप्दपपध्यपपप्नपप्नपप्पपपप्कप पप्जपप्भपपप्मपपप्यपपप्रपप्रपप्लपपप्जप पप्जपप्वपप्शपपष्मपप्सपपप्हपप्कपपप्खप प्रापप्जपप्डपप्डपप्कपप्यपप पपम्कपपम्खपपम्गपपभ्यपपम्झपपम्चप पम्छपपम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्झप पम्दपपम्णपपम्तपपभ्थपपम्दपपभ्धपपम्नप पम्नपपम्पपपम्भपपम्बपपभ्भपपम्मपपम्यप प्रमपप्रपपम्लपपम्ळपपम्ळपपम्वपपभ्शप पम्भपपम्सपपम्हपपम्कपपम्खपपम्गपप्रजप पम्झपपम्द्रपपम्भप्रपप्रयप

प्रज्ञपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चप

पपभ्कपपभ्खपपभापपभ्छपपभ्रजपपभ्छप पभ्जपपभ्झपपभ्ञपपभ्दपपभ्छपपभ्डपपभ्रप पभ्रपपभ्रपपभ्रवपपभ्रपपभ्रपपभ्रप पभ्रपपभ्रपपभ्रवपभ्रपपभ्रपपभ्रपपभ्रप पभ्रपपभ्रपपभ्रकपपभ्रवपपभ्रपपभ्रप पभ्रपपभ्रपपभ्रपपभ्रकपपभ्रवपपभ्रपपभ्रप पभ्रपपभ्रक्षपपभ्रवपपभ्रपपभ्रपपभ्रप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्ङपपम्चपपम्छप पम्जपपम्झपपम्ञपपम्दपपम्छपपम्डपपम्दप पम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्धपपम्नपपम्नपपम्मप पम्कपपम्ळपपम्वपपम्शपपम्थपपम्रपपम्हप पम्कपपम्खपपम्गपपम्जपपम्हपपम्कपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपमापपम्जपपम्हपपम्कप

पपय्कपपय्खपपयापपय्घपपय्ङपपय्चपपय्छप पय्जपपय्झपपय्जपपय्दपपय्छपपय्डपपय्दप पय्जपपय्बपपय्भपपय्दपप्रथपप्रमपय्नपप्यप पय्कपपय्खपपय्भपपय्भपपय्यपप्रयपप्रयपय्हप पय्कपपय्खपपयापप्यपप्यपप्यपप्यसपप्रहप पय्कपपय्खपपयापप्रजपपय्डपपय्कप प्रयपप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्छपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्वपपर्गपपर्तपपर्थप पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपपर्रपपर्लपपर्ळपपर्छपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्कपपर्खपपर्गपपर्जपपर्डपपर्वप पर्फपपर्यपप

पपन्कपपन्खपपनापपश्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्जपपन्टपपन्ठपपन्छपपन्तपपश्चपपन्कप पन्वपपश्चपपन्यपपरूपपन्तपपन्कप पन्ळपपन्वपपश्चपपन्सपपन्हपपन्कपपन्खप पनापपन्जपपन्डपपन्द्वपपन्सपपन्सपप

पपल्कपपल्खपपल्गपपल्घपपल्डपपल्चपपल्छप पल्जपपल्झपपल्ञपपल्टपपल्ठपपल्डपपल्ढप पल्णपपल्तपपल्थपपल्दपपल्धपपल्नपपल्नप पल्पपपल्फपपल्बपपल्भपपल्मपपल्यपपल्लप पल्सपपल्लपपल्ळपपल्ञपपल्वपपल्शपपल्थप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपल्गपपल्जपपल्डप पल्हपपल्फ़पपल्यपप पपळकपपळखपपळगपपळघपपळडपपळठप पळछपपळजपपळझपपळञपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळफपपळबप पळभपपळनपपळयपपळूपपळऱपपळलपपळळप पळळपपळवपपळशपपळषपपळसपपळहप पळकपपळखपपळगपपळजपपळडप पळकपपळखपपळग्रपप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळभप पळभपपळनपपळतपपळपपळभपळ पळभपळमपपळयपपळपपळपपळप पळळपपळअपपळवपपळशपपळषप पळहपपळकपपळखपपळग्रपपळजपपळइप पळढपपळफपपळखपप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्घपपश्ङपपश्चपपश्छप पश्जपपश्झपपश्जपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्टप पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नपपश्नप पश्पपश्कपपश्बपपश्मपपश्मपपश्यपपश्रप पश्रपपश्लपपश्ळपपश्ळपपश्चपपश्शपपश्षप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्टपपश्कपपश्यपप पपक्कपपष्खपपषापपष्घपपष्डःपपष्चपपष्ठप पष्जपपष्यपपष्पपपष्यपपष्ठपपष्कपपष्कप पष्जपपष्यपपष्पपपष्यपपष्रपपष्तपपष्कप पष्जपपष्यपपष्पपपष्यपपष्रपपष्तपपष्कप पष्खपपष्पपप्रजपपष्ठपपष्कपपष्कप पष्खपपषापप्रजपपष्ठपपष्कपपष्कप पष्खपपषापप्रजपपष्ठपपष्कपपष्कपप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्डपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप पस्डपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्थपपस्नप पस्नपपस्पपपस्कपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्नपपस्तपपस्लपपस्ळपपस्ळपपस्वपपस्शप पस्मपपस्सपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गपपस्जप पस्डपपस्डपपस्कपपस्यपप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्ङपपस्चपपस्छप पर्ह्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्टपपस्डपप पह्लपपस्तपपस्थपपस्दपपस्थपपह्लपपस्नपपस्पप पस्फपपस्बपपस्भपपह्मपपह्यपपह्लप पर्ट्कपपस्ळपपह्लपपस्शपपस्थपपस्सपपस्हप पर्ट्कपपस्खपपस्गपपस्जपपस्डपप पर्ट्कपपस्खपपस्गपपर्ट्जपपस्डपप पस्फपपस्यपप

पपक्ष्कपपक्ष्यपपक्ष्मपपक्ष्यपपक्ष्यपपक्ष्चप पक्ष्यपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्यपपक्ष्मपपक्षमपपक्षमपपक्षमपपक्षमप

less common half-forms

पपस्कपपस्खपपरगपपस्चपपस्कपपस्चपपस्छप परजपपस्झपपरञपपस्टपपस्ठपपस्डपपस्दप परगपपस्तपपरथपपस्दपपरथपपरनपपरगप परमपपरबपपरभपपरमपप पपस्यपपस्तप परळपपरगपवपपरशपप पपरशपपरसपपस्तपप

पपद्धकपपद्धखपपद्धगपपद्धघपपद्धङपपद्धचपपद्धछप पद्धजपपद्धझपपद्धअपपद्धटपपद्धडपपद्धडप पद्धणपपद्धतपपद्धथपपद्धदपपद्धधपपद्धनपपद्धपप पद्धफपपद्धबपपद्धभपपद्धमपप पपद्धयपपद्धलप पद्धळपपद्धपपवपपद्धशपप पपद्धषपपद्धसपपद्धहपप

पपद्कपपद्खपपद्गपपद्घपपद्डपपद्चपपद्छप पद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठपपद्डपपद्ढप पद्गपपद्वपपद्थपपद्दपपद्धपपद्वपप पद्फपपद्वपपद्भपपद्मपप पपद्यपपद्लप पद्कपपद्वपपद्शपप पपद्वपपद्सपपद्हपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रटप पक्रडपपक्रटपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रपपवपपक्रशप पपक्रयपपक्रसपपक्रहपप

पप्रक्रपपग्र्वपपग्रापपग्र्वपप्रह्मपप्रच्मपग्र्यप प्रज्ञपपग्र्मपप्रञ्जपपग्र्टपपग्र्वपप्रह्मपप्रद्मप पग्र्मपपग्र्वपपश्रमपग्रमपप पपग्र्यपपग्र्मपप्र्यप पग्रमपवपपश्रापप पपग्रमपग्रमपप

पपप्रकपपष्रखपपष्ट्रापपष्ट्रपपष्ट्रपपष्ट्रपपष्ट्रपपप्रवपपष्ट्रपपप्रवपप्रवपपपप्रवपपप

पपन्कपपन्खपपन्नापपन्धपपन्छपपन्छपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्दपपन्ठपपन्छपपन्दप पन्नापपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नप पन्मपपन्त्रपपन्भपपन्मपपन्नपपन्लप पन्मपवपपन्शपपन्भपपन्सपपन्सपप

पपड्रकपपड्रखपपड्रगपपड्रघपपड्रघपपड्रघप पड्रछपपड्रजपपड्रह्मपपड्रञपपड्रटपपड्रठपपड्रहप पड्रटपपड्रगपपड्रतपपड्रथपपड्रटपपड्रधपपड्रनप पड्रमपपड्रकपपड्रबपपड्रभपपड्रमपप पपड्रयप पड्रलपपड्रळपपड्रमपवपपड्रशपपड्रमपपड्रसप पड्रहपप

पपञ्कपपञ्खपपञ्चापपञ्चापपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्चापपञ्चापपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्चापपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्मपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चापप पपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चापप पपञ्चपपञ्चप पञ्चपप पपण्कपपण्खपपणापपण्ठपपण्डपपण्डपपण्छप पण्जपपण्डापपण्ञपपण्टपपण्ठपपण्डपपण्डप पण्णापप्जपपण्थपपण्दपपण्डापपण्जप पण्कपपण्डापपण्भपपण्मपप पपण्यपपण्जप पण्ळपपण्यपवपपण्डापप पपण्यपपण्जप

पपःकपपःखपपत्रापपश्चपपःखपपश्चपपश्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपश्चपपञ्चपपश्चपपञ्चप पञ्जपपश्चपपः पश्चपपञ्चपपः पश्चपपञ्चपपःसपपः पश्चपपञ्चपपःसपपः

पप्रक्रपपश्चपपश्रापपश्चपपश्र्डपपश्चपपश्र्यप पश्जपपश्झपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्र्णपपश्चपपश्थपपश्चपपश्चपपश्मप पश्र्मपपश्चपपश्भपपश्मपप पपश्यपपश्चप पश्र्चपपश्मपवपपश्शपप पपश्यपपश्चपपश्चपप

पपध्कपपध्खपपध्रापपध्रयपध्रुपपध्रुपपध्रुप पध्जपपध्रयपध्रुपपध्रुपपध्रुपपध्रुपपध्रुप पध्रुपपध्रुपपध्रुपपध्रुपपध्रुपपध्रुपपध्रुपप पध्रुपपध्रुपपध्रुपपध्रुपप पध्रुपपध्रुपपध्रुपपध्रुपप

पपत्कपपत्खपपत्रापपत्थपपत्कपपत्वपपत्छप पत्जपपत्कपपत्वपपत्वपपत्वपपत्वप पत्रापपत्नपपत्थपपत्वपपत्वपपत्नपप्रमपत्कप पत्वपपत्भपपत्मपप पपत्यपपत्नपपत्वपपत्मप वपपत्थपप पपत्मपपत्सपपत्वपप

पप्रक्रपप्रखपप्रापप्रघपप्रञ्ञपप्रच्यपप्रछप प्रजपप्रञ्ञपपप्रचपप्रटपप्रजपप्रञ्चपप्रवप्रणप प्रतपप्रथपप्रद्यपप्रधपप्रनपप्रपप्रपप्रकप प्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलपप्रजपप्रप्रपय प्रशपप पप्रथपप्रसपप्रह्रपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रधपपप्रङपपप्रचप पप्रखपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रखपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रथप पप्रनपपप्रपपपप्रफपपप्रबपपप्रभपपप्रपपप्रपपपप्रपपपप्रसपपप्रथपपप्रभपपप्रथपपप्रथपपप्रशपप पपप्रयपपप्रसपपप्रहपप